Chapter 5

bihar board class 9 geography notes – वनस्पति एवं वन्य प्राणी

प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य प्राणी

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

प्राकृतिक वनस्पति से तात्पर्य वैसे पेड़-पौधे से है जो पूरी तरह प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल उगते एवं बढ़ते हैं। हमारे देश में लगभग 47000 विभिन्न प्रजातियों के पौधे पाए जाते हैं। भारत में लगभग 15000 फूलों के पौधे हैं जो विश्व के कुल फूलों का 6% है। यहाँ लगभग 89,000 प्रजातियों के जानवर तथा विभिन्न प्रकार के ताजे पानी की मछलियाँ भी पाई जाती हैं। बड़े-बड़े वृक्षों एवं झाड़ियों द्वारा ढंके हुए विशाल क्षेत्र को वन कहते हैं।

भारत में वनस्पति एवं वन्य प्राणियों में विविधता के लिए विभिन्न कारण उत्तरदायी होते हैं। जैसे भू-भाग का स्वरूप, मिट्टी, तापमान, सूर्य का प्रकाश, वर्षण इत्यादि। पृथ्वी पर पेड़-पौधों तथा जीवों का वितरण काफी हद तक भौतिक दशाओं एवं जलवायु से प्रभावित होते हैं। किसी भी स्थान के पेड़-पौधे, जीव-जंतु तथा भौतिक वातावरण एक दूसरे से संबंधित होते हैं तथा आपस में मिलकर एक पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करते हैं। मनुष्य भी इस पारिस्थितिक तंत्र का एक हिस्सा है। भारत में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में पाए जाते हैं। यहाँ औसतन 200 से. मी. वर्षा होती है तथा इनकी ऊँचाई 60 मीटर या उससे अधिक है। उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन का विस्तार 50 से. मी.-200 सें.

मी. वर्षा वाले क्षेत्र में है। इसमें वृक्ष अपनी पत्तियों को एक साथ 10-2 महीने तक के लिए गिरा देते हैं। इसलिए इन्हें पतझड़ वन कहते हैं। उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन तथा झाड़ियाँ वहाँ उगते हैं जहाँ 50 से. मी. से कम वर्षा होती है। इस प्रकार की वनस्पति में कँटीले वन तथा झाड़ियाँ

पाई जाती हैं। इनमें खजूर, बबूल, यूफोर्बिया तथा नागफनी प्रधान हैं। धरातल पर अक्षांश के कारण तापमान में अंतर आता है। उसी प्रकार पर्वतीय क्षेत्र में बढ़ती ऊँचाई से तापमान प्रभावित होता है। इसीलिए पर्वत पर बढ़ती ऊँचाई के साथ वनस्पति का प्रकार बदलता है। हिमालय के निचले भागोंमें उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन तथा उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन पाए जाते हैं। 1000-2000

मीटर तक की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में आई शीतोष्ण कटिबंधीय वन होते हैं। 1500-3000 मीटर की ऊँचाई तक शंकुधारी वृक्ष पाए जाते हैं। 3600 मीटर से अधिक ऊँचाई पर अल्पाइन वनस्पति पाई जाती है। समुद्र तटीय क्षेत्रों में डेल्टाई एवं दलदल प्रदेशों में मैंग्रोव वन पाए जाते हैं। भारत वन्य प्राणियों में भी धनी है। यहाँ जीवों की 89000 प्रजातियाँ मिलती हैं। 1200 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यहाँ 2500 प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं। जो विश्व की 12% है। भारत में विश्व के 5%-8% तक स्तनधारी जीव पाए जाते हैं।

पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ घडियाल पाया जाता है।

प्रत्येक प्रजाति का पारिस्थितिकी तंत्र के सफल संचालन में योगदान है। लेकिन अबतक 1300 पादप प्रवातियाँ संकट में है तथा 20 लगभग नष्ट हो चुकी हैं। परिस्थितिक तंत्र के असंतुलन का मुख्य कारण बढ़ती हुई जनाण्या, कृषि तथा निवास के लिए धनों को अंधाधुंध काई, रासायनिक पा औद्योगिक अवशिष्ट एवं आतीय जमाव के कारण प्रदूषण, लालची व्यवसायियों का अपने व्यवसाय के लिए अत्यधिक शिकार है। अपने देश में पादप एवं जीके को रक्षा के लिए चौदव जीवमंडल निचय अर्थत् आरक्षित क्षेत्रों की स्थापना की गई है। 1992 से सरकार द्वारा पदप उरोगे को विवीय राया तकनीकी सहायता देने की योजना बनाई है। शेर संरक्षण, गैंडा संभग, म सरबण, महिपाल संरक्षण आदि बोजनाएँ बनाई गई है तथा उनका

क्रियान्वयन भी हो रहा है। 80 शनल पार्क, 149 वन्य प्राणी अन्त्यवन और कई चिड़ियाघर राष्ट्र की पादप वं जीव के संरक्षण के लिए बनाए गए हैं।

https://www.evidyarthi.in/